द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 16:59 - अंतमि अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 16:59

अपने आप को धोकर शुद्ध करो; मेरी दृष्टि के सामने से अपने बुरे कामों को दूर करो; बुराई करना छोड़ दो, भलाई करना सीखो
;
न्□याय की खोज करो, नरि्दयी को सुधारो
;
अनाथ का न्□याय चुकाओ, वधिवा का मुक़द्दमा लड़ो□
(□□□□□□ 1:16-17)

यदि आज तुम उसकी आवाज़ सुनो तो अपने ह्रदय को ऐसा कठोर न करो□ **(□□□ □□□□□□□ 95:7-8)** परमेश्□वर का मार्ग तो सद्धि है, यहोवा का वचन ताया हुआ है□ जो उस में शरण लेते हैं, उन सब की वह ढाल है□ **(□□□ □□□□□□□ 18:30)**

अब बोनेवाले का दुष्□टान्□त सुनो: जब कोई व्□यक्ति राज्□य का वचन सुनता है और उसे नहीं समझता, तो वह दुष्□ट आकर, जो कुछ उसके ह्रदय में बोया गया था, छीन ले जाता है□ यह मार्ग के किनारे की भूमि है जसि पर बीज बोया गया था□ और पथरीली भूमि जसि पर बीज बोया गया था, यह वह मनुष्□य है जो वचन सुनता है और तुरन्□त आनन्□दपूर्वक ग्रहण करता है□ फरि भी अपने आप में गहरी जड़ नहीं रखता इसलि□ थोड़े समय का है और जब वचन के कारण क्□लेश या सताव आता है तो वह तुरन्□त ठोकर खाता है□ और कंटीली झाड़ी में बोया गया, वह मनुष्□य है जो वचन सुनता है, और संसार की चनि्□ता और धन का धोखा वचन को दबा देता है और वह नषि्□फल हो जाता है□ अच्□छी भूमि में बोया गया, वह मनुष्□य है जो वचन को सुनकर और समझकर वास्□तव में फल लाता

है, कोई सौ गुणा, कोई साठ गुणा और कोई तीस गुणा□ **(□□□□□ 13:18-23)**

इसलि□ जो कोई मेरे वचनों को सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धि□मान मनुष्□य के समान है जसिने अपना घर चट्टान पर बनाया□ और मेह बरसा, बाढ़ें आई, आंधयिां चलीं और उस घर से टकराई ; फरि भी वह नहीं गरिा, क्□योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी□ परन्□तु जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उनका पालन नहीं करता, वह उस मूर्ख के समान है जसिने अपना घर बालू पर बनाया□ और मेह बरसा, बाढ़ें आई, आंधयिां चलीं और उस घर से टकराई ; तब वह गरि पड़ा और पूर्णत□ ध्□वस्□त हो गया□
(□□□□□ 7:24-27)

यहोवा की व्□यवस्□था सद्धि है, जो प्राण को पुन□ नया कर देती है, यहोवा के नयिम वशि्□वासयोग्□य हैं, जो भोलों को बु□द्धि□मान बना देती हैं□ यहोवा के उपदेश सही हैं, जो ह्रदय को आनन्दति कर देते हैं, यहोवा की आज्ञा शुद्ध है, जो आंखो को ज्□योतर्मिय कर देता है□ यहोवा का भय नर्मिल है, जो अनन्□तकाल तक बना रहता है, यहोवा की वधियिां सत्□य हैं, और पूर्णत□ धर्ममय हैं□ वे सोने, हां, बहुत से ता□ हु□ सोने से भी अधकि

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 16:59 - अंतिम अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 16:59

मनभावने हैं, वे तो मधु से, यहां तक कि टपकने वाले छत्ते से भी मधुर हैं। इनके द्वारा तो तेरे दास को चेतावनी मिलती है, इनका पालन करने से बड़ा लाभ होता है। अपनी भूल-चूक को कौन समझ सकता है ?

मेरे गुप्त पापों को क्षमा कर दे। अपने दास को ढिठाई के पापों से बचा। रख, वे मुझ पर प्रभुता करने न पाएं, तब मैं निर्दोष बना रहूंगा, और बड़े-बड़े अपराधों से बचा रहूंगा। मेरे वचन ओर मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहणयोग्य हो, हे यहोवा, मेरी चट्टान और मेरे उद्धारकर्त्ता।

(□□□ □□□□□□ 19:7-14)

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल और किसी भी दोधारी तलवार से तेज़ है। जीव प्राण और आत्मा, जोड़ों और गूदे, दोनों को आर-पार बेधता और मन के विचारों तथा भावनाओं को परखता है।

(□□□□□□□□□□ 4:12)